अध्याय–6
भारतीय पुनरूत्थान कालीन कला

बंगाल शैली का उद्भव विकास :–

सन् 1884 ई. में ई. बी. हैवेल मद्रास कला विद्यालय के प्रधानाचार्य बने। भारत में कांग्रेस की स्थापना होने से जागृति की कुछ लहर आयी। हैवेल ने भी इसमें योगदान दिया उन्होंने समस्त संसार का ध्यान भारत की प्राचीन कला की ओर आकर्षित करते हुए कहा कि – ''यूरोपीय कलाएँ तो केवल सांसारिक वस्तुओं का ज्ञान कराती है परन्तु भारतीय कला सर्वव्यापी अमर तथा अपार है।'' कुछ समय के पश्चात वे कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्रिंसिपल बने। यहाँ उनके सम्पर्क में अवनीन्द्रनाथ आए जिन्होंने आगे चलकर बंगाल शैली अथवा ठाकुर शैली का सूत्रपात किया। अवनीन्द्र बाबू की कला पर पश्चिमी, ईरानी, चीनी, जापानी, मुग़ल तथा अजन्ता का प्रभाव था। इन सब शैलियों के समन्वय से इन्होने एक नवीन शैली का सूत्रपात किया गया जिसे बंगाल शैली कहा गया। अवनीन्द्र बाबू ने अनेक शिष्य तैयार किए जिन्होंने देश के विभिन्न भागों में कार्य करते हुए इस शैली व कला का प्रचार किया। इनमें नन्दलाल बसु, असित कुमार हलदर, सुरेन्द्र नाथ गुप्त, देवी प्रसाद राय चौधरी, उकील बन्धु आदि प्रमुख थे। व्यक्तिगत विशेषताएँ होते हुए भी सब पर अवनी बाबू का प्रभाव था।

इस शैली के प्रेरणा के प्रधान स्रोत अजन्ता, मुग़ल तथा राजस्थानी चित्र थे। जापान, चीन तथा ईरान की कला का भी इस पर प्रभाव पड़ा। इस शैली में सरलता, स्पष्टता व स्वाभाविकता है। नियमों की जकड़ न होने से इस शैली का प्रत्येक चित्रकार अपनी पृथक–पृथक विशेषताओं का विकास कर सका। कोमल तथा गतिपूर्ण रेखांकन में इस शैली के चित्रकारों ने भारत की प्राचीन चित्रकला तक पहुँचने का प्रयत्न किया। शरीर रचना के यूरोपीय नियमों के साथ–साथ प्राचीन सामान्य पात्र विधान का पालन किया गया। रंग–योजना कोमल और सामंजस्य पूर्ण रही। रंगों में जलरंगों का अधिक प्रयोग हुआ, जिन्हें कुछ चित्रकारों ने वॉश पद्धति के माध्यम से भरा है, कुछ लोगों ने टेम्परा रंगों का भी प्रयोग किया है। प्राचीन ऐतिहासिक पौराणिक एवं साहित्यिक विषयों के साथ–साथ भारतीय घरेलू जीवन के भी कुछ चित्र बने परन्तु तत्कालीन वातावरण का प्रभाव इस पर कहीं भी दिखायी नहीं देता।

इस शैली का आरम्भ एक आन्दोलन के रूप में हुआ। प्रारम्भ में इसका सर्वत्र विरोध ही हुआ किन्तु आन्दोलन में भाग लेने वाले कलाकार तथा कला आलोचक दृढ़ता से अपने मार्ग पर बढ़ते रहे और अन्त में देश भर में अपना प्रभाव फैलाने में सफल रहे। भारत के बाहर भी इनके चित्रों की प्रर्दशनियाँ आयोजित की गयी। पुनरूत्थान काल के इस आन्दोलन के वास्तविक महत्व व स्वरूप को जनता को समझाने में श्री हैवेल, डॉ. आनन्द कुमार स्वामी, श्री असित कुमार हलदर तथा श्री गांगुली आदि के प्रयत्न सराहनीय थे। इस आन्दोलन से भारतीयों में राष्ट्रीय शैली का प्रचार बढ़ा यद्यपि आगे चलकर इस शैली का पतन हो गया और कलाकारों ने अपने–अपने व्यक्तिगत मार्गों पर बढ़ना आरम्भ कर दिया परन्तु कला की दृष्टि से भारतीय कला के क्षेत्र में बंगाल स्कूल का महत्व है।

बंगाल शैली की विशेषताएँ –

1. यह शैली सरल व स्पष्ट है।
2. रेखांकन के महत्व को पुनः प्रतिष्ठित किया गया।

3. रंगों में भड़कीला छाया–प्रकाश का प्रयोग न होकर शान्त रंग योजना का सहारा लिया गया है। रहस्यात्मक वातावरण 'वॉश' तकनीक के आधार पर बनाने की विशेष चित्रण–परम्परा का प्रयोग हुआ।
4. छाया–प्रकाश का नाटकीय प्रभाव उत्पन्न करने का नन्दतिक प्रयास किया गया है, लेकिन फोटोनुमा स्वाभाविकता का जोर समाप्त हो गया था।
5. इस शैली के चित्रों में वास्तु व प्रकृति के प्रखर आलंकारिक रूप का अभाव रहा है।
6. आलेखन स्थान के रूप व अन्तराल के सम्बन्ध में अकबरी या मेवाड़ी परम्परा भी समाप्त हो गई। प्रायः चित्र में एक निश्चित दृश्य को सरल तल–व्यवस्था के आधार पर दर्शाने का ही अधिक प्रयत्न हुआ।
7. बंगाल शैली में विदेशी कागज़ व जल रंगों का प्रयोग हुआ।
8. विषय वस्तु में भी इस शैली में पौराणिक कथाओं, सामाजिक जन–जीवन व ऐतिहासिक प्रेम गाथायें आदि विषय अधिक चित्रित हुये।

इस प्रकार आन्दोलन के फलस्वरूप चित्रकला का उभरा स्वरूप पुनर्जागरण चित्रकला, ठाकुर शैली, बंगाल–शैली जैसे प्रचलित शीर्षकों से कला इतिहास में प्रसिद्ध है।

बंगाल शैली के प्रतिनिधि चित्रकार व उनके चित्र–

नन्दलाल बसु –

आचार्य अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने भारतीय चित्रकला के जिस आन्दोलन को आरम्भ किया, उनके बाद उसका सफल नेतृत्व किया उनके शिष्य नन्दलाल बसु ने। नन्दलाल का जन्म 3 सितम्बर 1883 में बिहार के मुंगेर जिले में हुआ। कला में रूचि के कारण कॉलेज की शिक्षा का त्याग कर कलकत्ता के स्कूल ऑफ आर्ट में अवनीन्द्रनाथ से कला की शिक्षा प्राप्त की।

नन्दबाबू ने अजन्ता, बाघ गुफाओं के भित्ति–चित्रों की प्रतिलिपियाँ बनाई एवं अपने चित्रों में भी उनसे प्रेरणा ग्रहण की। रेखा, भाव, आकार आदि में उनकी शैली अजन्ता से निकट सम्बन्ध रखती है।

इनके चित्रों के विषय हिन्दू पौराणिक व धार्मिक कथाएं, बुद्ध के जीवन की घटनाएं आदि रहीं। उनके प्रमुख

चित्र संख्या–1 शिव का विषपान

चित्रों में सती, शिव का विषपान, बुद्ध व मेष, दुर्गा, पार्थ सारथी, अर्जुन, संथाल–संथालिन, यक्ष व मेघ, गांधी जी की डांडी यात्रा आदि हैं। नन्दलाल बोस शान्ति निकेतन में कला विभाग के अध्यक्ष भी रहे। वे रवीन्द्रनाथ टैगोर के साथ चीन भी गये और स्याही में प्रयोग किये। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन के लिये उन्होंने एक विशेष पोस्टर शृंखला बनाई जिसमें नवीन शैली का प्रयोग किया। शांति निकेतन में वे मास्टर मौसाय के नाम से प्रख्यात थे।

नन्दलाल बसु को भारत सरकार ने पद्मविभूषण से सम्मानित किया। वे ललित कला अकादमी के रत्न सदस्य भी रहे। नन्दलाल बोस ने शिल्पकथा एवं रूपावली नामक पुस्तकें भी लिखी जिनमें अपने कला सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये।

शिव का विषपान नामक चित्र बंगाल शैली का एक प्रतिनिधि चित्र कहा जा सकता है। चित्र हल्की कोमल लयात्मक रेखाओं में अंकित हुआ है। रेखाएँ, आकृति, मुद्रा एवं आँख, कान, नाक आदि पूर्णतया अजन्ता के प्रभाव को प्रस्तुत करते हैं। वॉश पद्धति द्वारा एक वर्णीय रंग योजना का प्रयोग हुआ है। (चित्र संख्या–1)

नन्द बाबू ने बाद में लोक शैली का आधार लेते हुए स्वतन्त्र, सहज व सशक्त आकारों में कांग्रेस के हरिपुरा

अधिवेशन के लिए एक चित्र शृंखला तैयार की थी जिसमें भारतीय लोकजीवन की झाँकियाँ तेज, तीखे आकर्षक रंगों एवं सशक्त रेखाओं में प्रदर्शित की। ढाकी (ढोल बजाने वाला) एवं देवी चित्र इस शैली के श्रेष्ठ उदाहरण है।

असित कुमार हाल्दार :–

असित कुमार हाल्दार का नाम बंगाल स्कूल के यशस्वी कलाकारों में शामिल है जिन्होंने कई वर्षों तक लगातार भारतीय कला की सेवा की।

अवनीन्द्र बाबू से कला शिक्षा प्राप्त करने के बाद पहले वे शान्ति निकेतन के कला विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए बाद में उन्होंने जयपुर स्कूल ऑफ आर्ट एवं लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट के प्रधानाचार्य पद पर कार्य किया। हाल्दार के आरम्भिक चित्रों में सरस्वती एवं महाकाली प्रमुख है। हाल्दार ने अजन्ता, बाघ व जोगीमारा गुफाओं के भित्तिचित्रों की प्रतिकृतियाँ भी बनाई। इनके चित्रों के विषय प्रायः पौराणिक रहे। मेघदूत, ऋतुसंहार व महाभारत पर चित्र बनाने के साथ–साथ इन्होंने उमरखय्याम की रचनाओं पर भी चित्र बनाए। उनके चित्रों में रेखा, रंग विधान, मुद्रा अंकन, संयोजन आदि सभी में लयात्मकता एवं मधुरता है। प्रकाश और लय, कुणाल, अकबर, वेद का अध्ययन आदि इनके उल्लेखनीय चित्र है।

चित्र संख्या–2 मां और शिशु

असित कुमार हाल्दार ने दो पुस्तकें ''आर्ट एण्ड ट्रैडिशन'' और ''आवर हैरिटेज इन आर्ट'' लिखी हैं, जो चित्रकला के विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक साबित हुई हैं। उन्होंने लिखा है कि – ''भारतीय चित्रकला में प्राचीन परम्परा की सांस्कृतिक, पैतृक सम्पति विद्यमान है, जो राष्ट्रीय सांस्कृतिक निधि की ठोस बुनियाद है। परम्परा ही हमारी कला की आधार शिला है जिस पर वर्तमान और भविष्य की कला का मंदिर निर्मित हो रहा है।''

असित कुमार हाल्दार ने चित्राकंन में लोक कला को परम्परागत चित्रकला में उच्च स्थान दिया। उनका मत है कि जन साधारण की कला की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। उसमें मनुष्य के आदिम कला प्रेम की भावना निहित है और उसमें मनुष्य जाति से सम्बन्ध रखने वाले विषयों का प्रतिबिम्ब है।

असित कुमार हाल्दार का चित्र माँ एवं शिशु अवनीन्द्र बाबू की शैली में बना सुन्दर चित्र है। (चित्र संख्या–2) यह चित्र भी हल्की, कोमल रंग योजना एवं कोमल, लयात्मक रेखाओं का आकर्षक उदाहरण है। वॉश पद्धति के कारण पीला व लाल रंग भी धूसर रूप में दिखाई देते हैं। चित्र की योजना भी सरल है। अग्रभूमि एवं पृष्ठभूमि को सरल रखा गया है।

मोहम्मद अब्दुल रहमान चुगताई :–

मोहम्मद अब्दुल रहमान चुगताई का जन्म 21 सितम्बर, सन् 1897 ई में मुग़ल कलाकार परिवार में हुआ था। उनके पूर्वज ''अहमद'' (नामक) मुग़ल शासक जहाँगीर के प्रधान वास्तु–शिल्पकार थे। चुगताई ख्याति प्राप्त प्रतिभा सम्पन्न पुनर्जागरण काल के कलाकारों में से एक विशिष्ट चित्रकार रहे। भावनात्मक एवं सौन्दर्य दृष्टि से उनके चित्रों का विशेष महत्व है। पशु अंकन, मुद्राओं, प्राकृतिक पृष्ठभूमियों की चित्रांकन शैलियों को देखते हुये कुछ विद्वान उनकी कलम को पर्सियन–मुग़ल कहते हैं और कुछ विद्वान ईरानी मुग़ल कला के नाम से सम्बोधित करते हैं। चुगताई ने हिन्दु धार्मिक, पौराणिक, आख्यानों के अनेक चित्र बनाये।

उनकी चित्र शैली की विशेषताओं में मुख्यतः प्राकृतिक सौन्दर्य, चित्र का आकर्षक संयोजन, सजीव

आकृतियाँ, गतिपूर्ण व महीन बाह्य रेखांकन छाया प्रकाश दर्शाने का प्रयास, आकर्षक मुख मुद्रा, कोमल एवं लयात्मक हस्त मुद्रायें, सुन्दर आभूषण अंकन इत्यादि उल्लेखनीय हैं। उनके कुछ चित्रों में आकृतियों के अंकन पर विदेशी प्रभाव भी देखा जा सकता है। उनका चित्र विश्वामित्र इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय है। इसमें अंकित राम और लक्ष्मण के मुख और केश सज्जा पर जापानी प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। यद्यपि चित्र की पृष्ठ भूमि में अंकित वृक्ष इत्यादि पर मुग़ल कला का प्रभाव अधिक है। उनके कुछ चित्रों पर अजन्ता कला की छाप दिखाई देती है। चित्रों में आकृतियों के पैरों की लम्बाई अधिक है।

इस प्रकार की आकृतियों में ऊषा, बंशी युक्त कृष्ण, अर्जुन को निर्देश देते कृष्ण, द्रोपदी एवं पांडव, चैतन्य की पत्नी इत्यादि हैं। चुगताई के चित्रों में रंग योजना अत्यन्त सुन्दर आकर्षक एवं लुभावनी है।

उनके चित्र रंग संयोजन के सुन्दर प्रमाण हैं। चुगताई के चित्रों का अध्ययन करते समय आभास होता है कि उन्हें पद्म पुष्पों से अत्यधिक लगाव रहा होगा क्योंकि अनेकों चित्रों में गुलाबी पद्म का अकंन प्रचुरता से किया गया है। कलात्मक

चित्र संख्या–3 राधिका

गुणों, सौन्दर्य, रंग–संयोजन की दृष्टि से होली स्नान के पश्चात् देवदासी, चित्रलेखा चित्र विशेष उल्लेखनीय है। चुगताई के उत्तरार्द्ध कालीन चित्रों में रंग संयोजन पर कांगड़ा कला शैली के रंगों का स्पष्ट प्रभाव झलकता है।

अनेक कला समीक्षकों ने इन्हें विश्वस्तर का कलाकार माना उनके चित्रों की प्रर्दशनियाँ भारत के साथ –साथ विदेशों में भी आयोजित हुई उनके चित्र इग्लैण्ड, जर्मनी फ्रांस, रूस अमेरिका व अनेक देशों में संग्रहीत हैं।

राधिका नामक चित्र चुगताई के अपूर्व कला कौशल को प्रस्तुत करने वाला प्रतिनिधि चित्र है। (चित्र संख्या–3) रंगों की मधुरता, रेखाओं की गत्यात्मकता एवं लयात्मकता अत्यन्त प्रभावपूर्ण है। राधिका की भाव–भंगिमा एवं मुद्रा भी प्रभावशाली है। चित्र बंगाल शैली का एक उत्कृष्ट चित्र माना जा सकता है।

आनन्द कुमार स्वामी :– आनन्द कुमार स्वामी का जन्म 1877 में कोलम्बो, श्रीलंका में हुआ। उनके पिता तमिल थे जो श्रीलंका में जाकर बस गये थे। वे एक बैरिस्टर थे। उन्होंने एक अंग्रेज महिला से विवाह किया था। आनन्द कुमार स्वामी के जन्म के कुछ ही समय बाद उनके पिता की मृत्यु हो गई। उनकी माँ उन्हें लेकर इंग्लैण्ड चली गई जहाँ आनन्द कुमार स्वामी की शिक्षा दीक्षा हुई। शिक्षा समाप्त कर आनन्द कुमार स्वामी श्रीलंका के एक अधिकारी के रूप में कोलम्बो में नियुक्त हुए जहाँ उन्हें भारतीय कला व दर्शन के प्रति रूचि उत्पन्न हुई। भारतीय कला, दर्शन व संस्कृति का अनुराग उन्हें भारत के निकट सम्पर्क में खींच लाया और उन्होंने भारतीय संस्कृति, कला और दर्शन के विषय में अनेक ग्रन्थ लिखे एवं धीरे–धीरे वह भारतीय कला के उत्कृष्टतम विवेचक के रूप में संसार भर में विख्यात हो गये।

आनन्द कुमार स्वामी ने 1908 से 1913 तक भारत की अनेक यात्राएँ की एवं कलात्मक महत्व के स्थानों का भ्रमण कर विभिन्न जानकारियाँ एकत्र की। राजपूत एवं पहाड़ी शैलियों का निरीक्षण किया व चित्रों का संग्रह किया और 1916 में ऑक्सफोर्ड प्रेस द्वारा राजपूत कला पर दो सचित्र खण्ड प्रकाशित कर भारतीय लघुचित्रण परम्परा को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया। उनके भारतीय कला सम्बन्धी लेख उस समय की प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में भी प्रकाशित हुए।

आनन्द कुमार स्वामी ने लगभग 20 पुस्तकें लिखी जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं –

1. हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट
2. इन्ट्रोडक्शन ऑफ इण्डियन आर्ट
3. राजपूत पेन्टिंग
4. डांस ऑफ शिवा

अपनी पुस्तकों एवं लेखों से आनन्दकुमार स्वामी ने भारतीय कला, धर्म व संस्कृति को विश्व के सम्मुख प्रस्तुत कर भारत का गौरव बढ़ाया। भारतीय कला के इतिहास में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

ई. बी. हैवेल :– आधुनिक भारतीय कला के इतिहास में श्री ई.बी. हैवल का अपना एक विशिष्ट स्थान है इन्होंने भारतीय कला के सैद्धान्तिक पक्ष को सरल, स्पष्ट व तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया। हैवेल ने भारतीय स्थापत्यकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला के तकनीकी पक्षों, प्रतीकों, निर्माण प्रक्रिया एवं रचना पद्धति पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किये। पुस्तक में मुग़ल शैली के संदर्भ में आबीना से जरब तक की प्रक्रिया (लघुचित्र बनाने की विधि) एवं उपयोग मे लिये गये कागज़ों (वसली) आदि की विस्तृत व्याख्या की गई है जो वर्तमान में भी कला शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं विद्वानों के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हैवेल ने भारतीय कला के अनेक पक्षों को अपनी पुस्तकों एवं लेखों के माध्यम से विश्व के समक्ष प्रस्तुत कर भारतीय कला के गौरव को बढ़ाया। सन् 1896 ई. में हैवेल मद्रास कला विद्यालय से कलकत्ता कला विद्यालय के आचार्य के रूप में नियुक्त हुये। उन्होंने अनुभव किया कि भारतीय कलाकार एवं छात्र यूरोपीय कला शिक्षण प्रणाली एवम् प्रभाव के कारण भारतीय कला को विस्मृत कर पाश्चात्य कला का अनुसरण कर रहे हैं। उस समय के आलोचकों, समालोचकों एवं विदेशियों के मध्य ई.वी. हैवेल ने एक सच्चे कला मर्मज्ञ की भाँति भारतीय कला के लिए सराहनीय शब्दों का प्रयोग किया। उन्होंने यह विचारधारा भी प्रदर्शित की कि पाश्चात्य कला की अपेक्षा भारतीय कलाकारों को अजन्ता, राजपूत, मुग़ल शैली को आधार मानकर कलाभिव्यक्ति करनी चाहिए। हैवेल ने स्पष्ट शब्दों में यह स्वीकार किया कि भारतीय कला आत्मा के अधिक निकट है और इसमें स्थूल जगत की अपेक्षा शाश्वत सत्यता का प्रदर्शन है जबकि पाश्चात्य कला इसके विपरीत भौतिकता के निकट है और इसमें स्थूल एवं मांसल सौन्दर्य है, पर आध्यात्मिकता की कमी है।

ई.बी. हैवेल ने भारतीय कला के पक्ष में इण्डियन स्कल्पचर एंण्ड पेटिंग, इण्डियन आर्किटेक्चर, और आईडिअल्स ऑफ इण्डियन आर्ट नामक पुस्तकों की रचना की। हैवेल ने अपने ग्रन्थों के माध्यम से भारतीय पारम्परिक कला के प्रति विश्व का ध्यान आकृष्ट कर भारतीय कला के कलात्मक गुणों को प्रस्तुत किया। भारतीय कला के क्षेत्र में श्री हैवेल का योगदान अमूल्य है।

रवींद्रनाथ ठाकुर :– आधुनिक भारतीय चित्रकला के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ ठाकुर का नाम महत्वपूर्ण है। रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक अच्छे लेखक, कवि, संगीतज्ञ, दार्शनिक होने के साथ–साथ एक अच्छे कलाकार भी थे। इन्होंने अपनी वृद्धावस्था की ओर बढ़ते हुए लगभग 67 वर्ष की आयु में चित्र बनाने की शुरूआत की। उनके चित्रण का आरम्भ उनके लेखन से ही हुआ। अपने लेखों एवं कविताओं में अनावश्यक शब्दों की काट–छांट करते समय उन्होंने उन्हें आकार देते हुए काल्पनिक रूपों में परिवर्तित कर दिया और आकार सृजन में आनन्द आने पर चित्र बनाने आरम्भ कर दिये और कुछ ही वर्षों में लगभग तीन हजार चित्र बना दिये। रवीन्द्रनाथ ने कभी कला की पारम्परिक शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। अतः उनकी कला सहज एवं नियमों से परे है। उन्होंने भारतीय कलाकारों को स्वतन्त्र व स्वच्छंद शैली में चित्रण करना सिखाया। रवीन्द्रनाथ के माध्यमों में भी स्वच्छन्दता है। उन्होंने, रंगीन स्याही, पैन, जल रंग आदि में चित्र बनाए। रंगों को कभी तूलिका तो कभी हाथ से, कपड़े से ही लगा दिया। कभी–कभी फूल–पत्तियों को रगड़कर ही रंगीन प्रभाव प्रस्तुत कर दिये इन सब कारणों से उनकी कला में बाल सुलभ शैली का दर्शन होता है।

रवीन्द्र बाबू के चित्रों में अनगढ़ आकृतियाँ, चेहरे, पेड़–पौधे आदि बहुतायत से बने हैं। रवीन्द्रनाथ के चित्रों की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रदर्शनियाँ हुई। जिन्होंने इन्हें विश्व विख्यात बना दिया। रवीन्द्रनाथ के चित्रों में स्वप्निल आकार रहस्यात्मक रूप में बने दिखाई देते हैं। उनके चित्रों में गहरे रंगों की अधिकता रही। कभी–कभी अपने दृश्य चित्रों में गहरे रंगों के साथ चमकीले रंगों का प्रयोग भी उन्होंने किया। रवि बाबू एक प्रयोगवादी कलाकार थे जिन्होंने कला को पारम्परिक

चित्र संख्या–4 मां और शिशु(रवीन्द्रनाथ टैगोर)

नियमों व आदर्शों से मुक्त करते हुए आत्माभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया इसीलिये उन्हें आधुनिक भारतीय कला के प्रणेताओं में से एक माना जाता है।

रवीन्द्रनाथ के चित्र प्रायः शीर्षकहीन हैं। उन्होंने अपने चित्रों को शीर्षक नहीं दिये। लेकिन माँ और शिशु चित्र स्वतः अपने शीर्षक को चरितार्थ करता है। (चित्र संख्या–4) उनके इस चित्र में सरल रेखीय शैली में एक स्त्री व बच्चे के आकार दिखाई देते हैं। स्त्री का चेहरा बच्चे पर झुका हुआ है। हल्की रेखाओं से स्त्री का चेहरा बनाया गया है। इनके चित्र ''स्त्री'' में एक स्त्री का झुका हुआ, चेहरा बना है। स्त्री का केवल मुख एवं एक हाथ दिखाई दे रहा है। शेष शरीर वस्त्र से ढका है। चित्र में पीले व भूरे रंग का प्रयोग हुआ है।

अवनीन्द्रनाथ ठाकुर :– 1817 को जन्माष्टमी के दिन बंगाल में जोरासांकु के प्रसिद्ध ठाकुर परिवार में एक नवीन देदीप्यमान नक्षत्र का उदय हुआ। जिसे अवनीन्द्र नाम दिया गया। आरम्भिक शिक्षा विद्यालय में ग्रहण करने के बाद घर पर ही उन्होंने संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया एंव संगीत की शिक्षा भी ग्रहण की। अपने पिता श्री गुणेन्द्रनाथ दादा गिरीन्द्रनाथ व चाचाओं ज्योतिरीन्द्र व रवीन्द्रनाथ आदि सभी से साहित्य संगीत व कला को सहज रूपों में ग्रहण किया। पिता व दादा अच्छे कलाकार थे अतः उनके निर्देशन में चित्र बनाने आरम्भ किए। जिस समय अवनीन्द्रनाथ ने चित्रकला के क्षेत्र में प्रवेश किया उन दिनों अधिकांशतः भारतीय चित्रकार यूरोपीय शैली में कार्य कर रहे थे, अतः अवनीन्द्र बाबू ने भी इटालियन कलाकार श्री गिलहार्डी एवं ब्रिटिश कलाकार श्री पामर से कला की विधिवत् शिक्षा ग्रहण की एवं यूरोपीय शैली में चित्र बनाए। उनके आरम्भिक चित्र पैन व स्याही से बने रेखाचित्र, व्यक्तिचित्र एवं दृश्यचित्र हैं। रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तक चित्रांगदा पर आधारित चित्र इनके आरम्भिक चित्र हैं।

अवनीन्द्रनाथ बाबू ने लगभग 1895 तक इसी शैली में कार्य किया, किन्तु बाद में पैतृक संग्रह में मुग़ल शैली के लघु चित्रों को अपनी प्रेरणा का आधार बनाया। जिसका प्रभाव 1895 ये 1900 के बीच बने उनके चित्रों पर स्पष्ट दिखाई देता है। जैसा कि इस समय में बने ''राधाकृष्ण'' श्रृंखला के चित्र यूरोपीय एवं भारतीय शैलियों के समन्वय को प्रस्तुत करते हैं। इसी समय उन्होंने रवि बाबू के कहने पर चण्डीदास एवं विद्यापति की वैष्णव पदावली का अध्ययन किया व उन पर आधारित चित्र बनाए। इस समय तक वे यूरोपीय शैली से भारतीय शैली की ओर अग्रसर हो चुके थे, जिसका प्रतिनिधित्व उनका ''शुक्लाभिसार'' नामक चित्र करता है जो पूर्णतः भारतीय शैली में बना उनका प्रथम चित्र माना जाता है। संयोग से अवनीन्द्रनाथ का परिचय कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट के प्रधनाचार्य श्री ई.बी. हैवल से हुआ, जिनकी प्रेरणा से अवनीन्द्र बाबू ने महान भारतीय शैलियों एवं चित्रों को अपनी प्रेरणा का आधार बनाया। उन्होंने अजन्ता, राजस्थानी, मुग़ल व पहाड़ी चित्रों का अध्ययन किया एवं बुद्ध चरित्र व कृष्ण चरित्र आदि पर श्रृंखला चित्र बनाए। उन्होंने भारतीय पौराणिक व संस्कृत साहित्य को भी अपने चित्रों का विषय बनाया तथा ऋतु संहार, रामायण, महाभारत आदि की घटनाओं को चित्रित किया। ''अभिसारिका'', ''श्रीराम व मायामृग'', ''बुद्ध व सुजाता'' आदि भारतीय प्रभाव युक्त उल्लेखनीय चित्र हैं।

1901–02 के लगभग अवनीन्द्र बाबू ने जापानी कलाकारों ''ताइकान'' व ''हिंसिदा'' के जो कि ठाकुर परिवार के अतिथि के रूप में कलकत्ता आए थे, उनके कार्य व शैली का

परिचय पाया एवं जापानी प्रक्षालन (वॉश) पद्धति को सीखा एवं स्वयं भी इस शैली में अनेकों प्रयोग किये। ''उमरखय्याम'', ''विरही यक्ष'' व ''गणेश जननी'' इसी प्रक्षालन पद्धति में बने महत्वपूर्ण चित्र है।

नये प्रयोगों के साथ–साथ वे परम्परागत भारतीय शैली में भी कार्य करते रहे। उन्होंने अन्य भारतीय कलाकारों के साथ अजन्ता, ऐलोरा, बाघ आदि गुफाओं की यात्रा की एवं अजन्ता के अनेक उत्कृष्ट चित्रों की अनुकृतियाँ भी बनाई। 1901 से 1905 के बीच बने चित्रों में ''बिल्डिंग आफ ताज'', ''शाहजहाँ के अन्तिम दिन'' आदि चित्र मुग़ल संयोजन, रंगों व अलंकरण को प्रस्तुत करते हैं। 1905 में इन्होंने बंगाल विभाजन के विरूद्ध आरम्भ हुए आन्दोलन से प्रेरित होकर ''भारत माता'' शीर्षक चित्र बनाया जो एक अद्‌भुत चित्र है।

1907 ई. में अवनीन्द्रनाथ ने अपने बड़े भाई श्री गगनेन्द्रनाथ के साथ ''इन्डियन सोसायटी ऑफ ओरिएन्टल आर्ट'' की स्थापना की जिसके द्वारा पूर्वी कला मूल्यों एवं आधुनिक भारतीय कला में नई चेतना जागृत हुई। इसके कार्यक्रमों में तत्कालीन भारतीय कलाकारों के चित्रों के साथ–साथ पाश्चात्य जापानी कलाकारों की कृतियों की भी प्रदर्शनियाँ हुई। अवनीन्द्र बाबू अपनी कला के माध्यम से जीवन व समाज के सभी पक्षों से जुड़े रहे। पौराणिक, धार्मिक व साहित्यिक विषयों के साथ–साथ इन्होंने दृश्यचित्र, पशु पक्षियों के चित्र, व्यक्ति चित्र व दैनिक जीवन से सम्बन्धित चित्र भी बनाए जिनमें ''देवदासी'', ''कजरी'', ''सूर्यपूजा'' व बंगाली रंगमंच के अभिनेता व अभिनेत्रियों के चित्र महत्वपूर्ण हैं।

1920–1926 के वर्षों में इन्होंने पेस्टल रंगों का भी सशक्त प्रयोग किया, पेस्टल रंगो में बने गांधी, टैगोर, सी. एफ. एन्ड्रयूज के व्यक्ति चित्र अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। ''आलमगीर'', ''नूरजहाँ'', औरंगजेब'' आदि इस युग के महत्वपूर्ण चित्र हैं। बाद के वर्षों में उनके चित्रों में ''लैला–मजनू'' श्रृंखला चित्र ''कवि कनकन चण्डी'' व ''कृष्ण मंगल'' श्रृंखला के चित्र भी विशेष उल्लेखनीय है। 1941 में अपने चाचा ''विश्वकवि रवीन्द्रनाथ का महाप्रयाण'' चित्रण करने के बाद अपनी तुलिका को लगभग त्याग दिया।

अवनीन्द्रनाथ एक अच्छे कलाकार होने के साथ–साथ एक आदर्श शिक्षक, कला समालोचक, साहित्यकार, रंगमंच अभिनेता, संगीतकार, शिल्पी आदि विविध प्रतिभाओं के धनी भी थे। भारतीय चित्रकला के पुनः उत्थान में उनका योगदान अविस्मरणीय है।

चित्र संख्या–5 भारत माता

भारत माता चित्र अवनीन्द्र बाबू ने 1905 ई. में बनाया। यह इनका नई बंगाल शैली का प्रथम प्रतिनिधि चित्र है। (चित्र संख्या–5) यह चित्र बंगाल विभाजन के विरूद्ध हुए आन्दोलनों से प्रेरित था। वॉश पद्धति में बने चित्र में कोमल रंगों एवं रेखाओं का प्रयोग हुआ है। भारतमाता को चतुर्भुजी रूप में प्रतीकात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। सपाट धरातल में बने चित्र के चारों ओर मुग़ल हाशिये का अंकन हुआ है।

ताज को देखते हुए शाहजहाँ का चित्र मुग़ल शैली के प्रभाव को प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से स्थापत्य एवं उसके आलेखन में मुग़ल लघुचित्रण शैली का प्रभाव है। मानवाकृतियों

को सरल शैली में अंकित किया गया है। रंगों का सीमित प्रयोग बंगाल शैली की विशेषता है।

यामिनी राय :– यामिनी राय का जन्म बाँकुरा (पश्चिम बंगाल) में 1887 ई. में हुआ उन्होंने कलकत्ता के गर्वमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट में कला दीक्षा ली। आरम्भ में उन्होंने पाश्चात्य शैली पर आधारित चित्र बनाए, बाद में बंगाल स्कूल से प्रभावित हुए परंतु उससे भी संतुष्ट न होने पर बंगाल की लोक कला व बिहार के पट चित्रण से प्रभावित हुए। इन्होंने ग्रामीण लोक कलाओं से प्रेरणा ग्रहण की। कुम्हारों, बुनकरों, गुड़िया व खिलौने बनाने वालों से प्रेरित हो अपना कला कार्य करते रहे। इस प्रकार यामिनी राय एक प्रयोगकर्ता के रूप में हमारे सम्मुख प्रकट होते हैं। उन्होंने पुस्तक चित्रण, भित्ति चित्रण व पट चित्रण आदि सभी प्रकार की संरचनाएँ की। उनके चित्रों में आकृतियाँ अलंकारिक हैं, आंखें बड़ी नुकीली कानों तक लम्बी बनी है। सरल व प्रभावपूर्ण रंगयोजना स्पष्ट रूप रेखा व संयोजन की सरलता इनके चित्रों की प्रमुख विशेषताएं हैं।

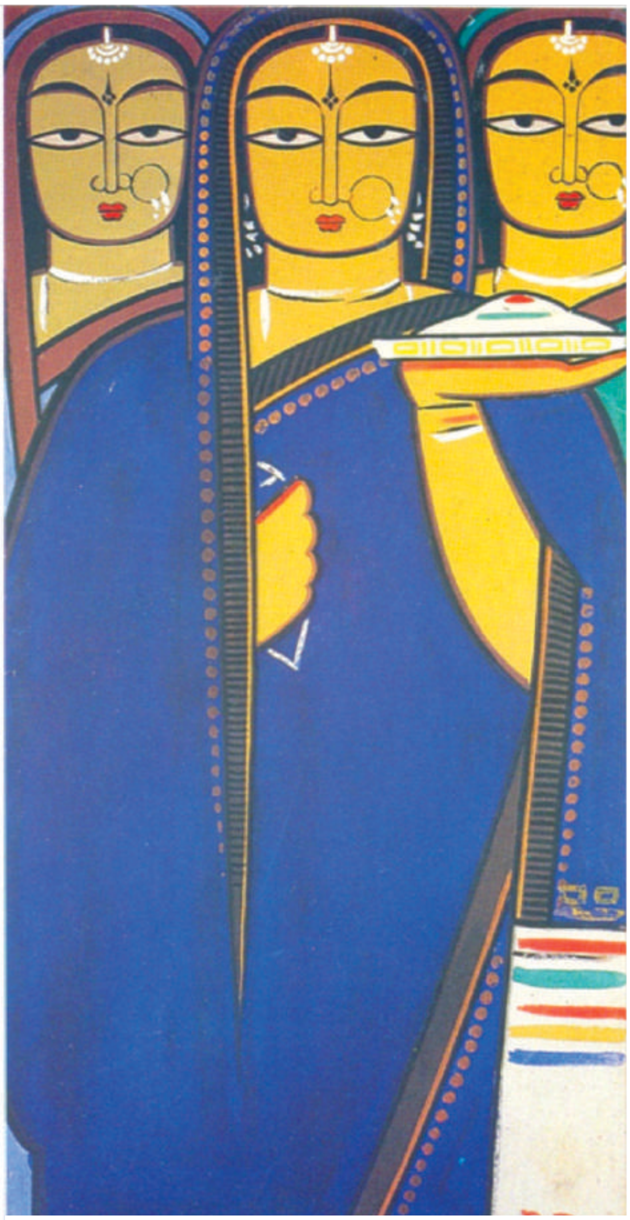

चित्र संख्या–6 तीन पुजारिनें

यामिनी राय ने लोक कला के प्रतीकों को ग्रहण कर उन्हें नवीन योजना में अलंकृत किया। उनके ग्राम्य जीवन संबंधी चित्र उनकी कला के उत्कृष्ट नमूने कहे जा सकते हैं। उन्होंने लोक कला के विषयों के अतिरिक्त पौराणिक व धार्मिक विषयों पर आधारित चित्र भी बनाए। उन्होंने टैम्परा रंगों द्वारा कपड़े, कागज़, पट्टे व चटाई आदि पर नवीन प्रयोग किये। उनकी दृष्टि हमेशा अनुसंधानात्मक रही, उन्होंने चमकदार रंगों, सरल आकारों का प्रयोग किया। अधिकांश चित्रों की रेखाएं मोटी एवं गतिमय है। बाद में इन्होंने लकड़ी की मूर्तियां भी बनाई, उनके चित्रों में ईसा मसीह व श्रृंगार आदि उत्तम है।

यामिनी राय की धार्मिक भावना, सरल प्रवृत्ति, लोकदृष्टि व रंगों के शुद्ध दृष्टिकोण ने बाद के कलाकारों को बहुत प्रभावित किया, 1969 में इनकी मृत्यु हुई। यामिनीराय के प्रमुख चित्र तीन पुजारिनें, सांथाल नृत्य, अन्तिम भोज, बिल्ली व केकड़ा, बिल्ली व मछली आदि हैं।

तीन पुजारिनें यामिनी राय का सर्वाधिक प्रशंसित एवं उल्लेखनीय चित्र है। सरल, सीधी, सशक्त मोटी रेखाएँ व सरल आकार चित्र की विशेषता है। नीले व पीले चमकदार रंग चित्र को आकर्षक बनाते है। कम रेखाओं में आकृतियों का अंकन नाक से कान तक जाती आँखें सीधी, नाक व छोटे होंठ सौम्यता का दर्शन कराते हैं। (चित्र संख्या–6)

कृष्ण एवं बलराम चित्र भी लोक कला के सरल आकारों, रेखाओं एवं आलेखनों को प्रस्तुत करता आकर्षक चित्र है। द्विआयामी सपाट पृष्ठभूमि में लयात्मक गतिपूर्ण आकृतियाँ भी हैं। चित्र के रंग भी सुन्दर है।

अमृता शेरगिल :– अमृता शेरगिल का जन्म 1913

ई. में हंगरी की राजधानी बूडापेस्ट में हुआ था। उनके पिता भारतीय व माता हंगेरियन थी। उन्हें बाल्यकाल से ही चित्रकला में रूचि थी। 11 वर्ष की आयु में उन्होंने इटली में फ्लोरेंस की एक चित्रशाला में कला की शिक्षा ली। इसके बाद उन्होंने पेरिस की चित्रशालाओं में भी कला का ज्ञान प्राप्त किया। पेरिस में उन्होंने फ्रेंच इम्प्रेशनिस्ट कलाकारों की कृतियों को देखा व उनका अध्ययन किया। 1931 में उनके चित्रों की प्रदर्शनी पेरिस में हुई, जिसने इन्हें विश्व विख्यात बना दिया। 1934 ई. में ये भारत लौट आई और 'भारतीय लड़कियाँ' नामक चित्र पर ऑल इंडिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट सोसायटी की प्रदर्शनी में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 1934 से 1937 तक उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया व अजन्ता के भव्य चित्रों को देखकर भारतीय कला व जीवन से बहुत प्रभावित हुई। उन्होंने अजन्ता व पहाड़ी चित्रों की सरलता व रंगों की सपाट कोमलता व प्रतीकात्मकता को समझा। अमृता की कृतियों पर पॉल गोगाँ का भी बहुत प्रभाव देखने को मिलता है। गोगाँ की कृतियों में तहिती द्वीप सम्बन्धी चित्रों का महत्वपूर्ण स्थान है। उसने वहाँ के हरे–भरे प्रदेश व स्त्री सौन्दर्य आदि को अंकित किया, उसी शैली को अपनाते हुए अमृता शेरगिल ने भारतीय विषयों के चित्र बनाए।

यद्यपि अमृता की समस्त शिक्षा विदेशी ढ़ंग से हुई थी लेकिन फिर भी वे भारतीय संस्कृति के बहुत निकट रही। उनके चित्रों में भारतीय कला की विशिष्ट तकनीक, रेखा की लय, छन्द व रंगों की चमक है। इनके चित्रों में लाल व पीले रंगों का सशक्त व आत्म अभिव्यंजक प्रयोग हुआ है।

अमृता के प्रमुख चित्रों में दक्षिण भारतीय ग्रामीण, पहाड़ी स्त्रियाँ, वधू का शृंगार, ब्रह्मचारी, तीन बहिनें, केले बेचने वाली, हल्दी पीसने वाली, कथा वाचक व लाल मिट्टी का हाथी आदि विशिष्ट हैं। तीन बहिनें नामक चित्र अमृता का एक प्रमुख चित्र है। आकृतियों, रंगों आदि में पॉल गोग्व का प्रभाव दिखाई देता है। पंजाब की वेशभूषा व संस्कृति को अमृता ने अत्यन्त सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। वधू का शृंगार' चित्र अमृता की एक अन्य उल्लेखनीय कृति है। चित्र में सरल आकृतियों व धूमिल रंग योजना का प्रयोग है। भारत की लोक संस्कृति को भी चित्र में देखा जा सकता है।(चित्र संख्या 7)

महत्पपूर्ण बिन्दु

1. यह शैली अवनीन्द्र नाथ ठाकुर एवं ई.बी. हैवेल द्वारा विकसित की गई।
2. शैली के प्रेरणा स्रोत अजन्ता, मुगल तथा राजस्थानी चित्र शैलियां थी।
3. शैली सरल, स्पष्ट एवं स्वाभाविकता पूर्ण है।
4. रेखाओं को महत्व मिला है।
5. हल्के कोमल रंगों का प्रयोग हुआ।
6. शैली के प्रमुख विषय भारतीय पौराणिक कथाएं, ऐतिहासिक गाथाएं, एवं सामाजिक जन जीवन सम्बन्धी रहे।
7. अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के प्रमुख शिष्य नन्दलाल बोस, असित कुमार हल्दार, के. वैंकटप्पा, शैलेन्द्र नाथ डे, शारदाचरण उकील आदि थे।

चित्र संख्या–7 वधु का शृंगार

अभ्यास प्रश्न

अति लघूत्तरात्मक

1. बंगाल शैली के प्रणेता का नाम बताइये।
2. बंगाल शैली के 3 प्रतिनिधि कलाकारों के नाम लिखिये।
3. भारत माता का चित्र किसके द्वारा बनाया गया?
4. बंगाल शैली के कलाकारों ने किस माध्यम में कार्य किया?

लघूत्तरात्मक

1. आनन्द कुमार स्वामी के बारे में बताइये।
2. रवीन्द्रनाथ ठाकुर की चित्रकला के बारे में संक्षेप में लिखिये।
3. यामिनी राय ने किस शैली को अपना आधार बनाया?
4. अमृता शेरगिल की आरम्भिक शिक्षा कहाँ हुई?

निबन्धात्मक

1. बंगाल शैली की कलागत विशेषताओं के बारे में लिखिए।
2. अवनीन्द्रनाथ ठाकुर का भारतीय कला में क्या योगदान रहा? स्पष्ट कीजिये।